यादों की बारात में हिंदी..

डॉ वी नारायण पिल्लै,
39/84, त्रिवेणी, नन्दकुमार लेन, कारिक्कामुरी क्रोस रोड, कोचीन-682 011
17.11.2000

प्रश्नः *सर, यदि मेरा विचार ठीक है तो सी एम एफ आर आइ की स्थापना 1947 में हुई और इसका मुख्यालय कोचीन में 1971 में स्थानांतरित किया. तब से अब तक कोचीन में कार्यरत इस राष्ट्रीय संस्थान का पहला मलयाली निदेशक है आप. भाषा से जुडे हुये साक्षात्कार होने के नाते मैं यह प्रश्न उठाने का हिम्मत लेती हूँ, सर, एक मलयाली के रूप में संघ की राजभाषा नीति ने आपके काम पर कैसा प्रभाव डाला ?*

उत्तरः जैसा कि आपको मालूम है मेरी 39 वर्ष की लंबी सेवावधि में केंद्र सरकार के 9 संगठनों की सेवा करने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ था. इन में कुछ दिल्ली में थे कुछ गोवा, चेन्नै या विशाखपट्टणम में. इसके सिवा देश के कई अन्य राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों में कार्यालयीन मामले के सिलसिले में दौरा भी किया है. मेरे अध्ययन काल में हिंदी दूसरी भाषा थी जो मैं ने द्वितीय दर्जे में उत्तीर्ण हुए भी. एन.पी.ओ.एल, एन.आइ.ओ, कृषि मंत्रालय और कृषि अनुसंधान परिषद में लगे मेरे पर्यटन काल में देश विदेश के कई लोगों से मुआइना करने का सौभाग्य भी मुझे प्राप्त हुआ था. 39 वर्ष की इस लंबी सेवावधि में मैं ने एक सच्चा भारतीय होने की कोशिश की थी और वैसे मैं माने गए भी. (यह मेरे लिए कम गर्व का विषय भी नहीं कि मैं एक केरलीय हूँ.)

प्रश्नः *निदेशक के रूप में सी एम एफ आर आइ में आपने अप्रैल 99 से अगस्त 2000 तक कार्य किए. मान लिजिए, यह उतनी लंबी अवधि नहीं है फिर भी आप ने इस काल में हिंदी के प्रगामी प्रयोग केलिए कई योजनाएं खींची व उन्हें कार्यान्वित कीं ऐसे करने में सहायक हुई बातें क्या आप बता सकते हैं ?*

उत्तरः सुनिए, विविध कार्यालयों की राजभाषा कार्यान्वयन समितियों से मेरा सम्बन्ध रहा है. इसके सिवा

संसदीय राजभाषा समितियों व अन्य संसदीय समितियों से मिलते जुलते रहने से मिले अनुभवों ने हिंदी में कुछ कार्यनीतियाँ रचाने केलिए उपयोगी निकली. विविध कार्यालयों के राजभाषा अधिकारियों का सहयोग भी इसकेलिए मुझे मिला था.

प्रश्नः *सर, राजभाषा स्वर्ण जयंती वर्ष के सिलसिले में संस्थान के निदेशक व राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष होते हुए आपने हिंदी के वहु आयामी विकास को लक्षित करते हुए एक कार्यन्वयन प्लानर खींचा था. भले ही आपके राष्ट्रीयावबोध इस से व्यक्त होता है, फिर भी आप ज़रा प्लानर के उद्देश्यों पर प्रकाश डालें तो..*

उत्तरः इस में संदेह नहीं कि प्रत्येक देश की राजभाषा स्वत्वावबोध का परिचाय है. प्रत्येक कार्यालय या संगठन की धारा से इसे जोडना, मैं कार्यालय प्रमुख का दयित्व मानता हुँ. इसलिए राजभाषा कार्यान्वयन समिति में कार्यालयीन परिप्रेक्ष्य में राजभाषा हिंदी के प्रचार व प्रसार को वढावा देने के सुझाव आये तो उसमें थेडा हेर-फेर करते हुए मैं ने स्वीकार किया.

प्रश्नः *इन कार्यक्रमों में से कुछ आपके याद में होंगे इसके बारे में थोडी जानकारी पाठकों केलिए सूचनात्मक होगा क्या आप बता सकते हैं ?*

उत्तरः ज़रूर. इस सिलसिले में बनाए प्लानर से प्रत्येक महीने में एक कार्यक्रम के क्रम में हम ने आयोजित किए थे, मेरी याद ठीक है तो हिंदी में मूल रचना कौशल वढाने केलिए अखिल भारतीय संस्थानीय प्रतियोगिता , आगामी पीढी में राट्रीयावबोध जगाने केलिए बच्चों के कार्यक्रम, भूमंडलीकरण के बदलते परिवेश में आगामी सहस्राब्द में भाषाओं की भाविब्य पर प्रकाश डालते हुए आयोजित प्रश्नोत्तरी , सृजनात्मक साहित्य के प्रचार केलिए आयोजित कवि सम्मेलन इन में कुच्छेक है. मैं ने सहर्ष देखा कि इन कार्यक्रमों में संस्थान के कार्मिक, उनके बच्चे और न्योत्तहार सक्रिय रूप से भाग लिया. प्रतियोगिताओं के विजेताओं , अतिथिगण व विशिष्ट व्यक्तियों का आदर-सम्मान भी इस सिलेसिले में किया था.

प्रश्नः *अभी मैं हिंदी से जुड़ा एक आम प्रश्न पूछूँ सर, मैं ने कई बार यह आलोचना सुनी है कि हिंदी के नामे सरकार वहुत धन का दुरुपयोग कर रही है. इस पर आप क्या बोलेगा, यह ठीक है? आपने भी एम एफ आर आइ में हिंदी के प्रचार केलिए कई कार्यक्रम आयोजित किए भी है ?*

उत्तरः सरकार की कोई भी योजना के कार्यान्वयक उनके कार्मिक हैं, नीतियों का निर्धारण करना नहीं पालन करना उनका दायित्व है. मेरे अनुभव में हिंदी के कार्यान्वयन केलिए निधि की कमी में

ने कभी महसूस की नहीं. सरकार की एक भी पैसा खर्च करते वक्त हमें देखना है कि हम फिजूलखर्च नहीं करते.

प्रश्नः *बहुत शुक्रिया जी, आपके विचार में एक सच्चे प्रशासक का स्वर है, वैसे आपके प्रशासनिक व प्रबंधकीय क्षमताएं संस्थान में सर्वमान्य हुए भी और हिंदी जैसे छोटे अनुभाग भी इस दौर कई अछूते क्षेत्रों में घुसने की कोशिश किए भी.*

उत्तरः हाँ, हाँ, कंप्यूटरीकरण और सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्रों में हिंदी को ले जाने की कोशिश भी हम ने किए थे. हिंदी वेब साइट से संस्थान की सूचनाएं कृषकों तक आसानी से पहूँचाने का एक कार्यक्रम भी था. अब शीला, मैं आप से पूछूँ प्रश्न, कहाँ तक पहूँचा वेब साइट का कार्यक्रम ? *चलता है सर, इसकेलिए हिंदी कार्मिकों का प्रशिक्षण शुरू किया है . आश है जल्दी से जल्दी हम कुछ कर पाएंगे.*

प्रश्नः *वैसे हिंदी में यह स्मारिका निकालने का निर्णय भी आपके समय का है इसकेलिए आप ने एक समिति का गठन भी किया और समिति में लिए निर्णयों के अनुसार ही इस विशेषांक की रूपकल्पना की गई है. इसकेलिए मैं आपको विशेष आभारी हूँ कि राजभाषा में, राजभाषा के ज़रिए हम कुछ न कुछ कर पाए. इस में जोडने केलिए संदेश के रूप में दो शब्द दें तो बडी कृपा होगी.*

उत्तरः 'जबरदस्तन करने वाला काम बेकाम होता है. ध्यान रखो, आकर्षक योजनाएं और खुले संवादों से हिंदी का प्रचार आसान कर सकता है'.

प्रश्नः *मैं आपका ज्यादा तंग नहीं करना चाहती हूँ, सिर्फ और एक प्रश्न सर, सरकार चाहता है कि राजभाषा के इस स्वर्ण जयंती वर्ष में किए गए काम का जायजा लें. आप शायद जानते होंगे कि सी एम एफ आर आइ में हिंदी अनुभाग की स्थापना होकर 12 वर्ष हुए हैं और इसके दौरान आप किसी न किसी प्रकार हिंदी कार्यान्वयन से जुडे रहे हैं. कार्यान्वयन पर आपका आम विचार क्या है ?*

उत्तरः संस्थान ने हिंदी के प्रचार केलिए सराहनीय काम किया है. इस केलिए सी एम एफ आर आइ को कई मान्यताएं मिली है. वर्ष 1994-95 में क्षेत्रीय आवार्ड, 1997-98 व 1998-99 में कोचीन टॉलिक से प्रथम स्थान आदि आदि जो कि संस्थान की राजभाषा कार्यान्वयन समितियों में होनेवाले खुले संवादों और तदनुसार अपनाई गई प्रायोगिक नीतियों के परिणाम है. इस अवसर पर मैं हिंदी के प्रगामी प्रयोग केलिए काम किए सब लोगों का अभिनंदन करना चाहता हूँ विशेषकर यह

स्मारिका निकालने केलिए काम किए वालों को. कामना करता हूँ आप ऐसा श्रम आगे भी करते रहे और वैसे जल्दी से जल्दी इसकी प्रति मुझे भी भेज दें.

सी एम एफ आर आइ में राजभाषा हिंदी को पथ-प्रशस्त करने में मेरे मार्गदर्शन किए इन उच्चाधिकारियों से किऐ साक्षात्कार सिर्फ साक्षात्कार ही नहीं बल्कि आत्मसाक्षात्कार है..

शीला पी जे,
सहायक निदेशक (रा.भा.), सी एम एफ आर आइ, कोचीन.

"मैं अपने देश में बच्चों के लिए यह जरूरी नहीं समझता कि वे अपनी बुद्धि के विकास केलिए एक विदेशी भाषा का बोझ अपने सिर पर ढोएं और अपनी उगती हुई शक्तियों का ह्रास होने दें। आज इस अस्वाभाविक परिस्थिति का निर्माण करने वालों को जरूर गुनहगार मानता हूँ। दुनिया में और कहीं ऐसा नहीं होता। इसके कारण देश को जो नुकसान हुआ है, उसकी तो हम कल्पना तक नहीं कर सकते, क्योंकि हम खुद उस सर्वनाश से घिरे हुए है।"

- महात्मा गांधी